नमाज़ की फ़ज़ीलत व अहमियत और नमाज़ छोड़ने पर वईद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَقِیۡمُوا الصَّلٰوۃَ وَلَا تَکُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُشۡرِکِیۡنَ ﴿۳۱﴾ (الروم)

(क़ायम रखो नमाज़ और मत हो शिर्क करने वालों में से)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूऊद (रज़ि०) कहते हैं कि मैं हुज़ूर अक़्दस (स.अ.व.) से दरयाफ़्त किया कि अल्लाह तआ़ला शानहू के यहाँ सबसे ज़्यादा महबूब अ़मल कौनसा है? इरशाद फ़रमाया कि नमाज़, मैंने अर्ज़ किया कि इसके बाद कौनसा है? इरशाद फ़रमाया कि माँ-बाप के साथ हुस्ने-सुलूक, मैंने कहा कि इसके बाद कौनसा है? इरशाद फ़रमाया : जिहाद। मुल्ला अ़ली क़ारी (रह०) कहते हैं कि इस हदीस में उल्मा के इस क़ौल की दलील है कि ईमान के बाद सबसे मुक़द्दम नमाज़ है। इसकी ताईद इस हदीस सही से भी होती है, जिसमें इरशाद है, यानी बेहतरीन अ़मल जो अल्लाह तआ़ला ने बन्दों के लिए मुक़र्रर किया है वह नमाज़ है।(फ़ज़ाइल-ए-नमाज़ पृष्ठ 204)

कामिल नमाज़ गुनाहों से पाक-साफ़ कर देती है

हुज़ूर अक़्दस (स.अ.व.) का इरशाद है कि जो शख़्स नमाज़ अपने वक़्त पर पढ़े, वुज़ू भी अच्छी तरह करे, ख़ुशू-ख़ुज़ू से भी पढ़े, खड़ा भी पूरे वक़ार के साथ हो, फिर इसी तरह रुकू-सज्दा भी अच्छी तरह से इतमीनान से करे, ग़रज़ हर चीज़ को अच्छी तरह अदा करे तो वह नमाज़ निहायत रौशन चमकदार बन कर जाती है और नमाज़ी को दुअ़ देती है कि अल्लाह तआ़ला शानहू तेरी भी ऐसी ही हिफ़ाज़त करे जैसे तूने मेरी हिफ़ाज़त की। और जो शख़्स नमाज़ को बुरी तरह पढ़े, वक़्त भी टाल दे, वुज़ू भी अच्छी तरह न करे, रुकू-सज्दा भी अच्छी तरह न करे तो वह नमाज़ बुरी सूरत से, काले रंग में बद्-दुआ़ देती हुई जाती है कि अल्लाह तुझे भी ऐसा ही बर्बाद करे जैसा तूने मुझे बर्बाद किया। इसके बाद वह नमाज़ पुराने कपड़े की तरह से लपेट कर नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है। (तिबरानी, दुर्रे-मनसूर)

नमाज़ी के हर-हर हिस्सा-ए-जिस्म के गुनाहों की मआ़फ़ी

अबू मुस्लिम (रह०) कहते हैं कि मैं हज़रत अबू उमामह् (रज़ि०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, वह मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे, मैंने अर्ज़ किया कि मुझसे एक साहब ने आपकी तरफ़ से यह हदीस नक़ल की है कि आपने नबी करीम (स.अ.व.) से यह इरशाद सुना है : कि जो शख़्स अच्छी तरह वुज़ू करे और फिर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़े, हक़-तआ़ला शानहू उस दिन वह गुनाह जो चलने से हुए हों और वह गुनाह जिनको उसके हाथों ने किया हो और वह गुनाह जो उसके कानों से सादिर हुए हों और वह गुनाह जिनको उसने आँखों से किया हो और वह गुनाह जो उसके दिल में पैदा हुए हों, सबको मआ़फ़ फ़रमा देते हैं। हज़रत अबू उमामह् (रज़ि०) ने कहा कि मैंने यह मज़मून नबी करीम (स.अ.व.) से कई बार सुना है। (रवाहु अहमद)

नमाज़ की बरकतें

इब्ने हजर (रह०) ने अल-मुनब्बिहात में हज़रत उसमान (रज़ि) से रिवायत नक़ल की है कि जो शख़्स औक़ात की पाबंदी के साथ नमाज़ अदा करता है, अल्लाह तआ़ला नौ चीज़ों से उस का इकराम फ़रमाते हैं : (१) उसको अपना महबूब बना लेते हैं। (२) उसको तंदुरुस्ती अता करते हैं। (३) फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। (४) उसके घर में बरकत अ़ता करते हैं। (५) उसके चेहरे पर सुलहा का नूर ज़ाहिर होता है ।(६) उसका दिल नर्म फ़रमा देते हैं। (७) हश्र के मैदान में इसको पुलसिरात से बिजली की तरह तेज़ी से गुज़ार देंगे। (८) दोज़ख़ से नजात अता फ़रमाएंगे। (९) जन्नत में नेक साथी अता करेंगे।

(नमाज़ के मसाइल का इंसाइकलोपीडिया जिल्दः १ पेज ४४)

नमाज़ छोड़ने वाले का अंजाम

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) बयान फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर अक़्दस (स.अ.व.) ने नमाज़ का ज़िक्र किया और फ़रमाया कि जो शख़्स नमाज़ का एहतिमाम करे, तो नमाज़ उसके लिए क़यामत के दिन नूर होगी और हिसाब पेश होने के वक़्त दलील होगी और नजात का सबब होगी, और जो शख़्स नमाज़ का एहतिमाम न करे इसके लिए क़यामत के दिन न नूर होगा और न उसके पास कोई दलील होगी और न नजात का कोई ज़रिया। इसका हश्र फिरऔ़न, हामान और उबइ-बन-ख़लूफ़ के साथ होगा। (अहमद, इब्ने-हिब्बान दुर्रे-मनसूर लिस्सुयूती) हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम(स.अ.व.) ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने जानबूझकर नमाज़ छोड़ा इसका नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाता है जिससे वह जहन्नम में दाख़िल होगा। (मकाशिफ़तुल-क़ुलूब) एक हदीस में है कि क़यामत के दिन बेनमाज़ी के हाथ बंधे होंगे, फ़रिश्ते मुंह और पीठ पर डंडे लगा रहे होंगे, जन्नत कहेगी मेरा तेरा कोई संबंध नहीं, न मैं तेरे लिए न तू मेरे लिए। जहन्नम कहेगी कि आजा मेरे पास, मैं तेरे लिए और तू मेरे लिए। एक हदीस में है कि जहन्नम में एक घाटी 'लम-लम'" है जिसमें बिच्छू और साँप होंगे, उनकी लंबाई एक महीने की दूरी के बराबर होगी। इस घाटी में बेनमाज़ी को अज़ाब दिया जाएगा। एक हदीस में है कि जहन्नम में एक घाटी है जो बिच्छुओं का घर कहलाता है हर बिच्छू खच्चरों के बराबर होगा इसमें बेनमाज़ी को अज़ाब दिया जाएगा। (नमाज़ के मसाइल का इंसाइकलोपीडिया जिल्दः १ पेज ४६)

मिनजानिब : हाशमी दवाखाना, अमरोहा, उत्तर प्रदेश, पीस ऑलवेज़ (रजि.)